प्रकाशन की तिथि 01.8.2018

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

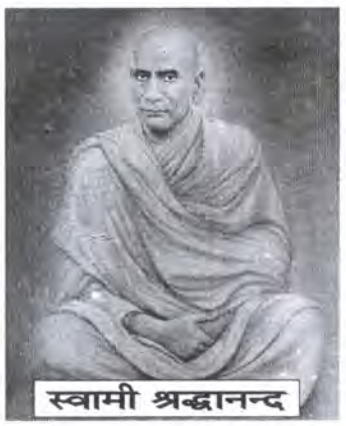
स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 41 अंक 8

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 500 रुपये

अगस्त 2018 विक्रम सम्वत् 2075 श्रावण-भाद्रपद

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

स्वाध्याय और श्रावणी

-स्व. स्वामी ओमानन्द सरस्वती

स्वाध्याय तथा श्रावणी पर्व का सम्बन्ध प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। मनुस्मृति में लिखा है:

श्रावण्यां प्रौष्ठपद्यां वाप्युपाकृत्य यथाविधि।
युक्तश्छन्दांस्यधीयीत मासान् विप्रोऽर्धपंचमान्।।

श्रावण या भाद्रपदमास की पूर्णिमा को यथाविधि उपाकर्म करके साढ़े चार मास तक वेदों का अध्ययन करना चाहिए। कूर्म पुराण में भी इसी प्रकार का वर्णन मिलता है –

उत्सृज्य ग्रामनगरं मासान् विप्रोऽर्धपञ्चमान् ।
अधीयीत शुचौ देशे ब्रह्माचारी समाहितः।। (उपविभाग अ.13)

साढ़े चार मास तक ग्राम नगर आदि से पृथक् स्वच्छ स्थान में आकर, एकाग्रचित्त और जितेन्द्रिय होकर वेदों का स्वाध्याय करना चाहिये।

इसी प्रकार याज्ञवल्क्य-स्मृति, वसिष्ठ स्मृति, वाल्मीकि रामायण तथा आश्वलायन-पारस्कर-लोगाक्षि आदि गृह्यसूत्रों में भी श्रावण मास में वेदाध्ययन-विशेषतया वेद के स्वाध्याय का विधान मिलता है।

श्रावणी पर क्या किया जाता है? पुराने का त्याग नवीन का ग्रहण। पुराने जीर्ण यज्ञोपवीत, मेखलादि का विसर्जन और स्वाध्याय क्रम में परिवर्तन किया जाता है। श्रावण से पौष तक चार-पाँच मास तक विशेषतया वेदों का स्वाध्याय किया जाता है और तदन्तर वेदांगों का। श्रावणी के आने पर द्वितीय वर्ष पुनः पूर्ववत् वेदों का स्वाध्याय प्रारम्भ कर दिया जाता है।

श्रावणी का विशेष महत्व वेदों के अध्ययन के ही कारण हैं। वेद सभी सत्य विद्याओं के मूल ग्रन्थ है संसार की सभी विद्यायें सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल बीज रूप से वेदों में निहित हैं।

चातुर्वण्यं त्रयो लोकाश्चत्वार आश्रमाः पृथक्।
भूतं भव्यं भविष्यं सर्वं वेदात्प्रसिध्यति।। (मनुस्मृति)

ब्राह्मणादि चारों वर्ण, ब्रह्मचर्यादि चारों आश्रम अर्थात् सम्पूर्ण वर्णाश्रम धर्म भूत, वर्तमान और भविष्यत् इन सब का ज्ञान वेद के अध्ययन से होगा। धर्म के चार लक्षण- (वेदः स्मृति सदाचारः, स्वस्य च प्रियमात्मनः) में वेद का सर्वप्रथम स्थान है क्योंकि- (वेदोऽखिलो धर्ममूलम् मनु) वेद ही धर्म का उत्पत्ति स्थान है, अतः वेदविहित धर्म तद्विरूद्धअधर्म समझना चाहिए।

स्वाध्याय किसका और क्यों?

"नास्ति वेदात्परं शास्त्रम्" वेद से बढ़कर अन्य कोई शास्त्र या ग्रन्थ नहीं है, 'वेदश्चक्षुः सनातनम्' सनातन-सबसे चक्षु-ज्ञान-विज्ञान का स्रोत वेद ही हैं। 'बुद्विपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे' वेद का एक-एक वाक्य बुद्धिपूर्वक है, एक भी शब्द विपरीत नहीं। अतः स्वाध्याय वेदों का ही करना चाहिये। मनु जी ने लिखा है-

वेदमेवाभ्यसेन्नित्यं यथाकालमतन्द्रितः।
तं ह्यस्याहुः परमं धर्ममुपधर्मोऽन्य उच्यते।

आलस्य और प्रमाद को छोड़कर नियत काल में नित्यप्रति वेदों का स्वाध्याय करना चाहिये, क्योंकि यही परम धर्म है। शेष उपधर्म हैं। महर्षि दयानन्द जी ने भी वेदों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को परम धर्म बतलाया है। महाभाष्यकर पतंजलि भी यही लिखते हैं- ब्राहाणेन निष्कारणो धर्मःषडंगो वेदो अध्येयो ज्ञेयश्च" अर्थात् सांगोपांग वेद का पढ़ना और जानना ब्राहाण का निष्कारणा- स्वार्थादि से रहित धर्म है। यहाँ ब्राहाण का ग्रहण सब वर्गों में मुख्य होने के कारण किया है अतः मनुष्य मात्र का ही वेदाध्ययन परम धर्म है।

वेद और वेदानुकूल अन्य ग्रन्थों का ही स्वाध्याय करना चाहिये। जो ग्रन्थ वेद-विरूद्ध हैं वे सर्वथा त्याज्य हैं।

या वेदबाहाः स्मृतयो याश्च काश्च कुदृष्टयः।
सर्वास्ता निष्फलाः प्रेत्य तमोनिष्ठा हि ताः स्मृताः ।।
म. 12।59

जो ग्रन्थ स्मृति शाखादि वेदविरूद्ध हैं वे सब निष्फल और तमोनिष्ठ अज्ञानान्धकाराच्छादित होने के कारण छोड़ देने चाहियें। वेदविरूद्ध ग्रन्थों के पठन से कोई लाभ नहीं, हानि ही होती है। महर्षि मनु और कूर्म-पुराण ने वेद के न पढ़नेवाले को मूढ़, शूद्र और समाज से बहिष्कृत बतलाया है।

अनार्ष, अश्लील, उपन्यास, नाटकादि को पढ़नेवाला कभी भी ब्रहाचारी या सदाचारी नहीं रह सकता। ऐसे श्रृंगार रस के दूषित ग्रन्थों का पढ़ना घर में स्वयं आग लगाना है, अश्लील ग्रन्थों के पढ़ने से ब्रहाचारी भी व्यभिचारी बन जाता है, साधारण व्यक्ति की तो बात ही क्या है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में पठन-पाठन विधि के अन्तर्गत संक्षेप से पाठ्य तथा अपाठ्य ग्रन्थों का उल्लेख किया है उनमें से कुछ यहाँ भी लिखे जाते हैं, विशेष विवरण सत्यार्थप्रकाश और संस्कार विधि में पढ़ना चाहिये।

"अब जो परित्याग के योग्य ग्रन्थ हैं उनका परिग्रहण संक्षेप से किया जाता है अर्थात जो-जो नीचे ग्रन्थ वह-वह जाल ग्रन्थ समझना चाहिये। व्याकरण में कातन्त्र, सारस्वत, चन्द्रिका, मुग्धबोध, कौमुदी, शेखर मनोरमादि। कोश में अमरकोशादि। छन्दोग्रन्थ में वृत्त रत्नाकरादि। शिक्षा में अध शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाणिनीयं मतं यथा इत्यादि। ज्योतिष में शीघ्रबोध मुहूर्तचिन्ता-मणि आदि। काव्य में नायिकाभेद, कुवलयानन्द, रघुवंश माघ, किराताजुनीयादि। मीमांसा में धर्मसिन्धु व्रताकार्दि। वैशेषिक में तर्कसंग्रहादि। न्याय में जागदीशी आदि। योग में हठप्रदी पिकादि। सांख्य में सांख्तत्वकौमुद्यादि। वेदान्त में योगवासिष्ठ पंचदश्यादि। वैद्यक में शार्ङ्गधरादि। स्मृतियों में मनुस्मृति के प्रक्षिप्त श्लोक और अन्य सब स्मृति, सब तन्त्र सब पुराण, सब उपपुराण, तुलसीदासकृत भाषा रामायण रूक्मिणीमंगलादि और सर्वभाषाग्रन्थ ये सब कपोलकल्पित मिथ्या ग्रन्थ हैं।

प्रश्न – क्या इन ग्रन्थों में कुछ भी सत्य नहीं?

उत्तर – थोड़ा सत्य तो है परन्तु इसके साथ बहुत सा असत्य भी है इससे विषसम्पृक्तान्नवत्त्याज्याः जैसे अत्युतम अन्न विष से युक्त होने से छोड़ने योग्य होता है वैसे ये ग्रन्थ हैं ।"
(सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास)

स्वाध्यायोपयोगी ग्रन्थ

ऋग्, यजुः, साम, अथर्व चार वेद आयुर्वेद धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थवेद, उपवेद शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष वेदांग सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व मीमांसा, उतर, मीमांसा (वेदान्त) दर्शन अर्थात् उपांग ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मणग्रन्थ ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक उपनिषद् मनुस्मृति वाल्मीकि रामायण महाभारत इत्यादि सब ऋषि-मुनिकृत ग्रन्थ हैं इनमें भी जो-जो वेदविरूद्धप्रतीत हों उस-उस को छोड़ देना चाहिये क्योंकि वेद ईश्वरकृत होने से स्वतः प्रमाण अर्थात् वेद का प्रमाण वेद ही से होता ब्राह्मणादि सब ग्रन्थ परतः प्रमाण अर्थात् इनका प्रमाण वेदाधीन हैं।

इन प्राचीन ग्रन्थों के अतिरिक्त ऋषि दयानन्दकृत वेदभाष्य, सत्यार्थ प्रकाश संस्कारविधि ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका, व्यव हारभानु, आर्याभिविनय, गोकरूणानिधि, आर्योदेश्यरत्नमालादि सभी ग्रन्थ तथा आधुनिक धार्मिक विद्वानों के उत्तमोत्तम ग्रन्थ सिद्धान्त, राजनीति, समाजशास्त्र नागारिकशास्त्र

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शिल्पविद्या आदि विषयों पर श्रेष्ठ अनश्लील ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये।

संसार के सभी महापुरूषों के जीवनचरित्र विशेषतया पाठनीय हैं, इनके स्वाध्याय से जीवनोत्थान में विशेष सहायता मिलती हैं।

ब्रह्मचर्य के साधन

आर्षग्रन्थों का महत्त्व

आर्ष–ग्रन्थ सब सत्य सरलता
के सांचे में ढाले हैं।
जनजीवन को अमर बनाते,
सौम्य–सुधा के प्याले हैं।।

आर्ष अनार्ष ग्रन्थ भी एक जटिल प्रश्न है, आर्ष क्या है और अनार्ष क्या? इसका साधारण उत्तर यही है ऋषिभिः प्रोक्तमार्षम् जो–जो ग्रन्थ ऋषियों द्वारा प्रोक्त कथित या लिखित हैं वे सब आर्ष हैं। किन्तु आजकल ऋषियों के नाम से भी धूर्त स्वार्थियों ने अनेक पाखण्ड पोथे रच डाले है अतः इस परिभाषा को इस प्रकार समझें–ऋषिभिः प्रोक्तमार्षम् वेदानुकूलंचेत् ऋषियों द्वारा प्रोक्त ग्रन्थ आर्ष हैं, वे भी तब जब कि वेदानुकूल हो विरूद्ध नहीं। आर्ष–अनार्ष ऋषि अनृषि के विषय में विस्तारभय से यहाँ अधिक नहीं लिखा जा सकता, फिर कभी अन्यत्र लिखा जायेगा।

आर्ष–ग्रन्थों का महत्त्व क्या है और उनको क्यों पढ़ना चाहिये इस विषय में सुधारकअग्रणी महर्षि दयानन्द जी महाराज के ही वचन यहाँ उद्धृत किये जाते है –

"ऋषिप्रणीत ग्रन्थों को इसलिये पढ़ना चाहिये कि वे बड़े विद्वान सब शास्त्रवित् और धर्मात्मा थे अनृषि अर्थात् जो अल्प शास्त्र पढ़े है और जिनका आत्मा पक्षपात सहित है उनके बनाये हुए ग्रन्थ भी वैसे ही हैं।"

"क्योंकि जो महाशय महर्षि लोगों ने सहजता से महान् विषय अपने ग्रन्थों में प्रकाशित किया है वैसा क्षुद्राशय मनुष्यों के कल्पित ग्रन्थों में क्योंकर हो सकता है? महर्षि लोगों का आशय, जहाँ तक हो सके वहाँ तक सुगम और जिसके ग्रहण करने में समय थोड़ा लगे इस प्रकार का होता है और क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहाँ तक बने वहाँ तक कठिन रचना करनी जिसको बड़े परिश्रम से पढ़ के अल्प लाभ उठा सकें जैसे पहाड़ का खोदना कोड़ी का लाभ होना। और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना।"

(सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास)

शेष पिछले अंक का...

पर्यावरण भारतीय शास्त्रों में

लेख – दीनानाथ बत्रा

जैन मतानुसार – वृक्षों को काटने से बीमारियां बढ़ती है। एक तिब्बती कहावत के अनुसार, पीपल का वृक्ष काटने से कोढ़ का प्रकोप बढ़ता है।

रामायण में सीता ने वट वृक्ष के सामने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की, 'हे देव देवता, मैं तुमसे विनती करती हूं कि मेरे पति को अक्षय शक्ति प्रदान करो, ताकि वह विजय प्राप्त करें।'

अग्नि पुराण के अनुसार – घर के उत्तर में पाकड़, पूरब में बरगद, दक्षिण में आम और पश्चिम में पीपल का वृक्ष लगाने से धन ऐश्वर्य और सौभाग्य की वृद्धि होती है।

स्कन्द पुराण के अनुसार कार्तिक मास में आंवले की छाया में पूजा पाठ तथा भोजन करने से व्यक्ति के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

मत्स्य पुराण :–

दशकूप समावापी दशवापी समाह दः
दशह दसम पुत्रः दशपुत्र समो द्रुमः।।

दस कुंओं के सामने एक वाबड़ी है। दस बावड़ियों के समान एक पुत्र तथा दस पुत्रों के समान एक वृक्ष है।

अतः वृक्षारोपण तथा इसके संरक्षण से हम परिवार का संरक्षण करते हैं तथा पुण्य के भागी बनते हैं।

चरक शास्त्र में सृष्टि सृजन के तत्वों का उल्लेख करते हुए कहा गया है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश तथा ब्रह्माण्ड से ही चर, अचर जगत की उत्पत्ति हुई है। यदि इनमें से एक का भी असंतुलन होता है, प्रकृति विकृत तथा विषम हो जाती है और पर्यावरण के प्रदूषण तथा विश्व में असंतुलन की स्थिति उपस्थित हो जाती है।

भारत ने सदा सृष्टि की पूजा की है। गोस्वामी तुलसीदास ने 'सियारामय सब जगजानी' कहकर जग को राममय बना दिया है। हमने पर्वत, नदियों सूर्य, चन्द्र वृक्षों को देवता मान कर अध्यात्मभाव से पूजा की है। हमने प्रकृति का शोषण कभी नहीं किया। हम ध्यान रखें कि प्रकृति हमें कभी नहीं छोड़ेगी यदि हम इसे छेड़ेंगे। और यह स्थिति हमारे सामने उपस्थित है।

विज्ञान, तकनीक एक दूसरे के पूरक हैं ज्ञान, भाव, कर्म, उद्योग उपयोग प्रयोग तथा योग सब प्रकृति के संरक्षण के कवच हैं।

हम प्रकृति से पर्यावरण की सुरक्षा की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। प्रकृति व्यर्थ वस्तुओं को हजम करती है और इसके बदले में सुन्दर से सुन्दरतम् वस्तुओं का सृजन करती है। सृजन करते हुए हम किसी का ह्रास नहीं करते।

महात्मा गांधी जी ने कहा था – कामनाओं, लालसाओं को पूर्ण करने की दौड़ हमें अधिक कामुक बनाती है और इससे मानसिक संतुलन बिगड़ता है। निश्चय ही इसका प्रभाव पर्यावरण पर भी पड़ता है।

भोग विलास की
अभिवृद्धि, कभी भूख को
शान्त नहीं कर सकती।

जयशंकर प्रसाद जी ने
ठीक कहा है–
अपने में सब कुछ भर,
कैसे व्यक्ति विकास करेगा।
यह एकान्त स्वार्थ भीषण है,
अपना नाश करेगा।

हमारे ऋषियों का मंत्र है 'इदं न मम, जगत् हिताय' – ऋषियों, मनीषियों की पर्यावरण की अवधारण को मूर्तरूम देने से ही विश्व को सुखमय तथा निरामय बना सकेंगे।

जड़ और चेतन में अखण्ड चेतना के दर्शन करने में सब का भला है। जयशंकर प्रसाद की यह पंक्तियां सदा के लिये हमारा मार्गदर्शन करती रहेंगी।

समरस थे जड़, चेतन,
सुन्दर साकार बना था।
चेतना एक विलसती,
आनन्द अखण्ड घना–था।

भगवान् शिव और पार्वती –

भगवान् शिव जगत् पिता है। उन्होंने जगजननी पार्वती को एक दिन अपने पास बुलाकर कहा 'देवी, तुम्हें जगत् के सब प्राणियों का भरण–पोषण करना है। उनके लिये अन्न की व्यवस्था करनी है। पार्वती शिव का रूप निहारने लगी और सोचने लगी कि शिवजी के समाधिस्थ होने से पूर्व उनसे मार्गदर्शन प्राप्त कर ले।'

पार्वती ने प्रणाम कर कहा, हे जगत् पिता–आपने मुझे अन्न की व्यवस्था का भार दिया। मैं सहर्ष आपके आदेश का पालन करूंगी। यह आप की सहायता के बिना संभव नहीं है। ' देवी आपकी सहायता के लिये मैं तत्पर हूं। मांगो आपको क्या चाहिये।' पार्वती ने कहा, 'स्वामी मुझे आपका त्रिशूल चाहिये। मैं इसका उपयोग हल के रूप में करूंगी। आपके नादिये (बैल) का हल जोतने के काम में लगाऊंगी। खेतों की जुताई के अलावा इसके गोबर से खाद का काम भी लिया जा सकेगा। गोबर से गोबर गैस भी तैयार की जा सकेगी। इसकी सहायता से कुंओं से पानी भी निकाला जा सकेगा। मैं आपके जटा–जूट में निवास करने वाली गंगा की भी याचना करती हूं। आपके गण मेरे साथ जायेंगे। वे श्रमिक के रूप में कार्य करेंगे।' स्वामी, पौधों को चूहों से बचाने के लिये मैं आपके सर्पो को पहरेदारों के रूप में खेतों में रखूंगी। आपका यह डमरू पक्षियों से अनाज की रक्षा करेगा। आक आक और धतूरे का उपयोग मैं खेत की वाड़ पर करूंगी। अनाज एकत्र होने पर इसके रख–रखाव के लिये आपके शरीर पर लगी भस्म काम में आयेगी। आपके खप्पर से अन्न वितरण का कार्य सुगम हो जायेगा।

भगवान् शिवजी पार्वती की बात सुन कर अति प्रसन्न हुए। सबके कल्याण हेतु शिव ने अपने सब श्रृंगार पार्वती को जगत् हिताय भेंट कर दिये। भगवान् शिव पार्वती दोनों के समायोजन से धरती मां ने सब की भूख मिटा दी। मां पार्वती अन्नपूर्णा बन गई। यह संवाद पर्यावरण के संरक्षण के लिये हमारा मार्गदर्शन करता है।

भोजन में छिपी वैज्ञानिकता –

प्राणीमात्र के लिए भोजन सबसे आवश्यक पदार्थ है। हमारे शास्त्रों में अन्न को ब्रह्म कहा है। रस विष्णु एवं भोक्ता महेश्वर देव है।

हमें ऋषियों ने बताया है, भोजन को ईश्वर के प्रसाद रूप में ग्रहण किया जाए। इस भाव से भोजन की पवित्रता बनी रहती है। भोजन करने से पूर्व आचमन, थाली के चारों ओर पानी की, क्रिया –प्रक्रिया, ग्रास, बाहर निकाल कर रखना। भोजन बनाने वाली गृहिणी सर्वप्रथम कौए, गाय तथा ब्राह्मण के लिये भोजन परोसती हैं। उपनिषद्कार के इस कथन 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' के उपदेश को सार्थन किया जाता है।

दैनिक उपासना

आज के भारत के करोड़ों बान्धव इस श्लोक का उच्चारण करते हैं और धरती मां पर पाद रखने के लिये क्षमा मांगते हैं।

समुद्र वसने देवि, पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णु पत्नि, नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे।।

मां से क्षमा मांग कर हम पंचभूतों, नवग्रह, दिशा, काल, लोक से सबके कल्याण के लिये प्रार्थना करते हैं, स्नान करते हुए गंगा, सरस्वती, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, गोदावरी, महानदी के पवित्र जलों का स्मरण करते हैं। पर्वतों तथा पवित्र नगरों को भी नमस्कार करते हैं।

इतिहास के झरोखे से –

राम वन में सीता को ढूंढते

शेष पृष्ठ 6 पर ....

सम्पादकीय

-आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

इस मास में श्रावणी तथा जन्माष्टमी जैसे महत्वपूर्ण पर्व आर्यों द्वारा सोत्साह मनाये जायेंगे। श्रावणी का सम्बन्ध वेदों के स्वाध्याय तथा जन्माष्टमी योगेश्वर श्रीकृष्ण के पावन जीवन से सम्बद्ध है। आर्य जाति का स्वत्व वेद और प्रेरणास्रोत वैदिक मर्यादाओं के पालन कर्ता श्रीकृष्ण जैसे महामानवों के जीवन पर आधृत है। सदियों से आर्यजाति अपने इन पूर्व पुरूषों पुण्यपुरूषों से प्रेरणा प्राप्त कर अनुप्राणित होती रही है। कालक्रम से इनमें विकृतियॉ भी आती रही है। वर्तमान में एक बहुत बड़ा जन समुदाय वेद तथा वैदिक विचार धारा से दूर होकर विकृति का पात्र बन गया है और वैदिक मर्यादाओं के संवाहक राम तथा श्रीकृष्ण जैसे महापुरूषों के पावन जीवन में सांस्कृतिक विकृति उत्पन्न कर, उसी का उपासक होकर रह गया हैं। महाभारत काल के पश्चात् रचित पौराणिक साहित्य ने इस विकृत सॉस्कृतिक विस्तार को प्रचुर प्रोत्साहन प्रदान किया हैं। ऋषि दयानन्द ऐसे प्रथम महापुरुष हैं जिन्होंने अपने ऊर्जस्वी व्यक्तित्व से इस अन्धविश्वास को विध्वस्त करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है। अपने जीवन काल में ही उन्होंने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहरा कर इस विकृति का साहसिक विरोध किया तथा आर्य सन्तानों को वैदिक मान्यताओं की ओर ऋषि-मुनियों की निष्पाप, विश्वकल्याण कारिणी जीवन शैली की ओर चलने की प्रेरणा प्रदान की। आज आर्य जाति की दुर्दशा का एक मात्र कारण वेदमार्ग से उसका भटक जाना हैं। ऋषि दयानन्द ने श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे

महापुरूषों के जीवन से जुड़ी प्रत्येक विकृति को अस्वीकार कर उन्हें वैदिक परम्पराओं से सुसंस्कृत महामानव का सम्मान दिया। उन्होंने धार्मिक सामाजिक, राजनीतिक, मर्यादाओं के लिए ही नहीं अपितु समस्त कर्तव्यकर्मों शुचिता के लिए वेदों को प्रमाण माना और उसी के अनुसार जीवन यापन की प्रेरणा प्रदान की। श्रावणी पर्व का सम्बन्ध वेद तथा वैदिक वाङ्मय के स्वाध्याय से जुड़ा हैं। वेद का स्वाध्याय और तदनुरूप जीवन निर्माण ही मनुष्य का परम धर्म हैं। इस सम्बन्ध में ऋषि का वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। यह वाक्य प्रत्येक आर्य के लिए विशेष रूप से विचारणीय हैं। आज आर्य यदि श्रीकृष्ण जैसे तेजस्वी बनने का संकल्प ले वैदिकी मर्यादा में उस तेज को धारण करें, पाखण्ड, अन्याय, अत्याचार के नाश के लिए श्रीकृष्ण की तरह दृढ़ता से संकल्प सिद्वहोकर सामने आये तो आसुरी वातावरण निशिचत रूप से नष्ट हो जाएगा। दुर्भाग्य यही है कि आज हम महापुरूषों का नाम लेते हैं पर उनके गुणों को धारण करने में हमारी रूचि नहीं होती। हम उस सुदर्शन चक्रधारी, असुर गण विनाशक वेद विद्या निष्णात श्रीकृष्ण जैसे तेजस्वी बन कर विश्व को सुख-समृद्धि की ओर लायें। छोटा सा दीपक अपने तेज से अपार अन्धकार को समाप्त कर प्रकाश कर देता है। जिसमें तेज होता है वही बलवान होता है। योगी भर्तृ हरि के शब्दों में ''तेजो यस्य विराजते स बलवान स्थूलेषु कः प्रत्ययः।'' परमात्मा आर्य जाति को तेजस्वी बनायें हममें अपने दिव्य तेज का आधान करें। ''तेजो ऽसि तेजो मयि धेहि''।

तुझको आगे बढ़ना होगा

तुझको आगे बढ़ना होगा, हर बाधा से लड़ना होगा,
तिमिर हो चाहे कितना गहरा, तुझको उससे भिड़ना होगा।
फैलेगा उजियारा इक दिन, ऐसा धीरज धरना होगा,
आंधी तूफानो के आगे, चट्टानो सा अड़ना होगा ।।

बदले भारत बदले लोग, प्रण यह अब करना होगा,
छोड के हर विचार पुराना, इतिहास नया अब गडना होगा।
कोई साथ चले न चले, पर तुझको निरंतर चलना होगा ,
एक दीप की ज्योति जैसे, हर पल तुझको जलना होगा ।।

घोर निराशाओं में तुझको, आशा दीप जलाना होगा।
करके मर्दन संत्रासों का, सिंह समान गर्जना होगा ।

देश की माटी चंदन सोना, इसका वंदन करना होगा।
माँ भारती के लालों को अब, घर-घर क्रंदन करना होगा ।

काली-काली काल रात में, अटल-पुंज फैलाना होगा ।
हारे मन की हार को, जीत का स्वप्न दिखाना होगा ।

जागे हर पल भाव जीत का, ऐसी लगन लगाना होगा ।
अपनी दृढ़ शक्ति से तुझको, हार का भाव भुलाना होगा ।

पल-पल जलकर अग्नि जैसे, खुद का बदन तपाना होगा ।
दूर हटे अँधियारा देश का, सूरज जैसे बनना होगा ।

रोके जो पथ दुश्मन तेरा, उसको शीश गंवाना होगा ।
बन विजयी हर रण का तुझको विजयी शंख बजाना होगा।

थाम के दामन आशाओं का, आशा पथ पर चलना होगा ।
कर आलोकित पथ को अपने, जुगनू जैसे जलना होगा ।

ऊँचे-ऊँचे खड़े शिखर हों, ऊँचाइयों से भरी डगर हो ।
हिम-खण्डों की चीर के छाती, हर रास्ता सुगम बनाना होगा ।

कर्म के पथ पर चलना होगा, कर्म वेग सा करना होगा ।
अर्जुन जैसा बनकर तुझको, धारण अस्त्र अब करना होगा ।

देकर प्राणों की आहुति, वरण मौत का करना होगा ।
गर्व करे हर भारतवासी, ऐसी गाथा रचना होगा ।

तुझको आगे बढ़ना होगा, हर बाधा से लड़ना होगा ।
तिमिर हो चाहे कितना गहरा, तुझको उससे भिड़ना होगा ।।

-आचार्या सुनीता बुग्गा

तू आई मेरे अंगना में, खुशियाँ मिलीं हजार

बेटी! तेरी एक हंसी पर, जीवन है बलिहार ।
तू आई मेरे अंगना में, खुशियाँ मिलीं हजार।।
तू हंसती तो खिलें कमल-दल,
तू रोये-जग में अंधियारा।
तेरे ही कलरव से गूंजे,
निर्जन सूना विपिन हमारा ।।
बेटी! तू अनमोल रतन है, ममता का संसार ।
तू आई मेरे आंगन में, खुशियां मिली हजार ।।
छमछम तेरी बजे पायलिया,
विह्वल मन-मयूर हरषाये ।
तू हंस कर जब करे ठिठोली,
वीणा औ मृदंग शरमाये ।।
मां की लोरी घर में गूंजे, गूंजे गीत-मल्हार ।
तू आई मेरे अंगना में, खुशियां मिलीं हजार ।।
फुदक-फुदक कर चले अंगनवा,
घुंघरू मानो छम-छम बजते ।
तुझे गोद में पाकर बाबा,
शिशु की भांति हंसे-मचलते ।।
तू दादी की प्राण-धरोहर, जग तुझ पे बलिहार ।
तू आई मेरे अंगना में, खुशियां मिलीं हजार ।।
गुड़ियों के तू ब्याह रचाये,
नव-नूतन पोशाक सजाये ।
मगर विदा करती जब उनको,
तेरे नयन अश्रु भर लाये ।।
देख-देख कर खेल निराले, उर में उमड़े प्यार ।
तू आई मेरे अंगना में, खुशियां मिलीं हजार ।।
इक दिन तेरी सजे पालकी,
सोनचिरैया-सी उड़ि जैहै ।
छोड़ के आंगन इस बाबुल का,
प्यारी लाड़ो! तू चलि जैहै ।।
हिया दरकि, फूटैं द्वै आंसू, मैया खाय पछार ।
तू आई मेरे अंगना में, खुशियां मिलीं हजार ।

-डॉ राम बहादुर 'व्यथित'

शेष पिछले अंक का...

क्या द्रौपदी पाँच पाण्डवों की पत्नी थी

प्रश्न – द्रौपदी युधिष्ठिर की ही पत्नी थी – इस बात के और क्या–क्या प्रमाण है?

उत्तर – द्रौपदी युधिष्ठिर की ही पत्नी थी। इसके कितने ही प्रमाण दिए जा सकते हैं। हमने ऊपर सिद्ध किया द्रौपदी का विधिवत् पाणिग्रहण युधिष्ठिर के साथ ही हुआ था। विराट्–नगरी में जब कीचक ने द्रौपदी को परेशान किया तथा वह सहायता के लिए भीम के पास गई तो उसके द्वारा कुशल होने की बात पूछने पर उसने कहा कि जिसके पति युधिष्ठिर हों वह बिना शोक के रहे यह कैसे संभव है? (विराट पर्व 18–1) वहां जब दासियां भीम और उसके सम्बन्धों के बारे में सन्देह करती है तो द्रौपदी को अपने छोटे देवर के साथ उसका नाम जोड़ने से दुःख होता है। (विराट पर्व 19–10, 11,12,), यदि भीम भी पति होता तो उसे कष्ट क्यों होता, यही नहीं जब वह भीम से कहती है कि जिसके बहुत से भाई, श्वसुर और पुत्र हों, ऐसी और कौन स्त्री ऐसे कष्ट भोगने के लिए विवश हुई होगी (विराट पर्व 20–13)। यहां उसने नहीं कहा कि जिसके बहुत से पति हों। कीचक को मारकर भीम कहता है कि – जिसने मेरे भाई की पत्नी (मेरी पत्नी नहीं कहा) का अपहरण करने की चेष्टा की थी उस कीचक को मारकर आज मैं उऋण हुआ (विराट पर्व 22–79)। कोई अपनी पत्नी को ही दांव पर लगा सकता है इसलिए जुए में द्रौपदी को दांव पर लगाना भी यही सिद्ध करता है कि द्रौपदी युधिष्ठिर की ही पत्नी थी। उसने भरी सभा में कौरवों (तथा अन्य लोगों से) भी यही कहा था (69–11–907) कि मैं धर्मराज युधिष्ठिर की पत्नी हूँ। जयद्रथ वन में जब द्रौपदी की कुशलता पूछता है तो द्रौपदी स्वयं की कुशलता के साथ–साथ (12–267–1694) कहती है कि मेरे पति युधिष्ठिर तथा उनके भाई भी कुशल हैं और फिर (270–7–1701) युधिष्ठिर की ओर संकेत करते हुए साफ कहती है कि ये मेरे पति हैं। सन्धि कराने के लिए गए श्रीकृष्ण दुर्योधन को धिक्कारते हैं (28–8–2382) 'दुर्योधन तेरे अतिरिक्त और ऐसा अधम कौन है जो बड़े भाई की पत्नी को सभा में लाकर उसके साथ वैसा अनुचित व्यवहार करे, जैसा तूने किया है।' श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को दुर्योधन के बड़े भाई (युधिष्टिर) की ही पत्नी कहा है। स्वयं को युधिष्ठिर की पत्नी घोषित करते हुए (शान्ति पर्व 14–5–4451) द्रौपदी गौरवान्वित होती है। स्वयं युधिष्ठिर भी अपनी पत्नी द्रौपदी को घसीटते हुए सभा में लाए जाने से दुःखी हैं तथा वनवास के समय भीम से कहते हैं (52–44–1094) मेरी पत्नी द्रौपदी केश पकड़कर सभा में लाई गई थी। यह मैं कैसे भुला सकता हूँ। दुर्योधन को लताड़ते हुए स्वयं धृतराष्ट्र (सभा पर्व 71–25–912) कहते हैं कि 'तू धर्मराज युधिष्ठिर की पत्नी द्रौपदी को लाकर पापपूर्ण बात कर रहा है। इन्द्रप्रस्थ आकर अर्जुन की पत्नी सुभद्रा ने द्रौपदी के पांव छुए तो द्रौपदी उसे आशीर्वाद देती (220–24–62) है– 'बहिन! तेरा पति शत्रु–रहित हो। द्रौपदी ने अन्य स्थानों पर भी (वन पर्व 26–34–35) स्वयं को युधिष्ठिर की ही पत्नी कहा है। भीम, अर्जुन, नकुल व सहदेव ने कहीं भी द्रौपदी को पत्नी स्वीकार नहीं किया है और न ही द्रौपदी ने कहीं उन्हें अपना पति कहा है...

प्रश्न – आपके उपर्युक्त विवेचन से भली प्रकार सिद्ध हो गया कि द्रौपदी धर्मराज युधिष्ठिर की ही पत्नी थी मगर (विराट पर्व 22–90–1915) में द्रौपदी ने पांच गन्धर्वों (नाम व रूप बदले हुए पाण्डवों) को अपना पति कहा है, इसका क्या समाधान है?

उत्तर – जब उपर्युक्त विवेचन से भली प्रकार यह सिद्ध हो गया है कि द्रौपदी महाराज युधिष्ठिर की ही पत्नी थी तो फिर पुनः उन्हें अन्य पाण्डवों की पत्नी सिद्ध करने का प्रयत्न व्यर्थ ही नहीं, बल्कि महापाप है। 'पति' शब्द का अर्थ केवल घरवाला ही नहीं होता है। बल्कि पा–रक्षणे 'सं पति' का अर्थ रक्षा करने वाला 'रक्षक' होता है। कीचक के प्रसंग में ही द्रौपदी स्वयं को युधिष्ठिर की पत्नी तथा भीम अपने भाई की पत्नी कह चुका है। अतः यहां द्रौपदी के कहने का तात्पर्य यह है कि पांच गन्धर्व सदा उसकी रक्षा किया करते हैं। द्रौपदी ने एक बार नहीं, बहुत बार यह बात कही है कि उसके इन्द्र के समान पांच पति हैं मगर द्यूत सभा में वह स्पष्ट शब्दों में कहती है (सभा पर्व 67) 'मैं पाण्डवों की सहधर्मिणी हूँ, मैं धर्मात्मा युधिष्ठिर की भार्या हूँ।'

प्रश्न– क्या आपको लगता है कि महाभारत में प्रक्षेप करने के पीछे भारतीय–संस्कृति तथा आदर्शों को हेय बताने, महाभारत को कल्पनीय तथा अविश्वसनीय सिद्ध करने तथा हमारे सम्माननीय महापुरुषों को चरित्रहीन आदि बताने का ही एक षड्यन्त्र है?

उत्तर– बिल्कुल ठीक, यही बात है। प्रक्षेपक ने जिस द्रौपदी को पांच–पांच पतियों की पत्नी बताने का अपराध किया है, वह पतिव्रता, विदुषी, पराक्रमी, चिन्तक, बुद्धिमान तथा एक आदर्श महिला थी। कुन्ती उसे आशीर्वाद देते हुए कहती (198–5, 6, 7) है कि जैसे इन्द्राणी इन्द्र में, स्वाहा अग्नि में, रोहिणी चन्द्रमा में, दमयन्ती नल में, भद्रा कुबेर में, अरुन्धती वसिष्ठ में तथा लक्ष्मी नारायण में भक्ति और प्रेम रखती है, वैसे तू भी अपने पति में अनुरक्त रहे। भद्रे! तुम सदा सुखी, दीर्घजीवी, वीर–पुत्रों वाली, सौभाग्यशालिनी, भोग–सामग्री से सम्पन्न, पति के साथ यज्ञ में बैठने वाली तथा पतिव्रता होओ। इस आशीर्वाद में हमें द्रौपदी जैसी अनुपम एवं आदर्श महिला का दिग्दर्शन होता है.... वह भरी सभा में भीष्मादि विद्वानों तथा योद्धाओं से अनेक प्रश्न करके उन्हें निरुत्तर कर देती है। अपने अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए वह धरती पर शयन करने और अपने बाल खुले छोड़ने की प्रतिज्ञा लेती है। श्रीकृष्ण जब सन्धि–प्रस्ताव लेकर जाते है तो उन्हें युद्ध की घोषणा करके आने की प्रेरणा देती है। वही एक तेजस्वनी देवी है जो युधिष्ठिर जैसे शान्त तथा सौम्य–पुरुष को भी अग्निपुंज बना देती है। ऐसी अनुपम वे अद्वितीया देवी को लांछित करना घोर अपराध है। आज भी बड़े–बड़े तथाकथित वक्ता तक इस निराधार बात को लेकर द्रौपदी को कोसते रहते हैं कि उसी के यह कहने पर कि 'अन्धों के अन्धे ही पैदा होते हैं' महाभारत का युद्ध हुआ.... जबकि द्रौपदी ने यह बात कही ही नहीं है....।

मनुष्य मात्र के लिए जीवन उपयोगी महत्वपूर्ण बिन्दु

दयालुता समाज को बाँधने वाली स्वर्णिम श्रृंखला है, दयालुता प्रतिशोध में सदैव श्रेष्ठ होती है।

यदि आप गुस्से के एक क्षण में **धैर्य** रखते हैं तो आप दुःख के सौ दिन से बच सकते हैं।

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अन्धकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है।

सोने का प्रत्येक धागा मूल्यवान होता है, उसी प्रकार **समय** का प्रत्येक क्षण भी मूल्यवान है।

विचार सुनना पुष्पों को चुनने जैसा है और उन पर चिन्तन करना उन्हें माला में गूँथने के समान है।

अज्ञान ईश्वर का अभिशाप है, **ज्ञान** वह पंख है, जो हमें उड़ाकर स्वर्ग तक लें जाता है।

व्यवहार वह दर्पण है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है।

दुःखो से भरी दुनिया में वास्तविक सम्पत्ति धन नहीं, **सन्तुष्टता** हैं।

सुख का मूल संतोष है, **संतोष** यद्यपि कड़वा वृक्ष है तथापि इसका फल बड़ा ही मधुर और हितकर है।

- संकलन सत्य प्रकाश आर्य

देश की आजादी की 71वीं वर्षगाठ पर

'स्वराज्य प्राप्ति व देश की आजादी के प्रथम उद्घोषक एवं प्रेरक ऋषि दयानन्द'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हमारे देश को आठवीं शताब्दी व उसके बाद मुसलमानों ने गुलाम बनाया था और उसके बाद अंग्रेजों की ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने इस पर राज्य किया। वास्तविकता यह है कि सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य सृष्टि तिब्बत में हुई थी। सारे विश्व के पूर्वज यहां एक परिवार के रूप में रहा करते थे। परमात्मा ने यहीं पर ही अमैथुनी सृष्टि में चार आदिम ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को उत्पन्न कर सृष्टि की आदि में उन्हें चार वेदों का ज्ञान दिया था। आदि सृष्टि के लोग इन ऋषियों से वेदों का ज्ञान प्राप्त कर पूर्ण ज्ञानी हो गये थे। उन्होंने अन्य सभी मनुष्यों को उपदेश द्वारा वेदों का ज्ञान देने के साथ उनको उनके भोजन व कर्तव्यों से भी अवगत कराया था। उन्हें बताया गया कि उन्हें शाकाहारी भोजन करना है। उस समय उनके आसपास नहरों व जल स्रोतों में स्वच्छ व निर्मल जल उपलब्ध हो जाता था। वायु पूर्ण शुद्ध थी। वृक्ष अनेक वा सभी प्रकार के फलों से लदे हुए थे। आसपास गायें मौजूद थी जिनका दुग्ध सभी मनुष्यों के लिए उपलब्ध था। इन सब पदार्थों से उनका निर्वाह आसानी से हो जाता था। समय के साथ तिब्बत में मनुष्यों की जनसंख्या बढ़ी। कुछ लोगों का आपस में विवाद भी हो जाता था। अतः ऐसे अनेक कारणों से लोगों ने समूहों में संसार के अनेक स्थानों पर जाकर वहां निवास करना आरम्भ कर दिया। समय समय पर उनका एक दूसरे पास आना–जाना व मिलना होता रहा होता होगा। वेदों व भारतीय इतिहास के शीर्ष विद्वान स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार *आर्यों ने समस्त विश्व में* आर्यावर्त के वर्तमान के भारत नामी भौगोलिक स्थान को सर्वोत्तम जानकर यहां पर आकर निवास किया व इस निर्जन स्थान व भूखण्ड को प्रथम बार बसाया। तभी से यह स्थान आर्यावर्त्त कहलाया। आर्यावर्त्त से पहले इसका अन्य कोई नाम नहीं था और न कोई लोग या जाति यहां बसती व रहती थी। सृष्टि के आरम्भ के कुछ वर्ष बाद ही आर्य तिब्बत से सीधे आर्यावर्त वा भारत आकर बस गये थे। सृष्टि की रचना व मनुष्योत्पत्ति को लगभग 1.96 अरब वर्ष हो चुके हैं। इस लम्बी अवधि में संसार में अनेक भौगोलिक, जातीय व सामाजिक परिवर्तन हुए हैं। मुस्लिम व विदेशियों ने अपने राज्यों की नींव को मजबूत करने के लिए नाना प्रकार की कल्पनायें हम पर थोपी हैं जिन्हें विदेशियों के उच्छिष्ट भोजियों ने अपने आर्थिक व इतर स्वार्थों के कारण स्वीकार कर लिया। वास्तविकता वही है जो स्वामी दयानन्द जी ने कही है। आर्य ही इस आर्यावर्त व भारत के मूल निवासी हैं। आर्यों ने किसी पर आक्रमण कर उन्हें पराजित नहीं किया और फिर यहां बसे हों यह मान्यता कपोल कल्पित व अस्वीकार्य है।

यह भी ज्ञातव्य है कि सृष्टि के आरम्भ से आर्यों का न केवल आर्यावर्त्त–भारत पर ही अपितु विश्व के सभी देशों पर चक्रवर्ती राज्य रहा है। भारत के सभी चक्रवर्ती सम्राट वेदों के सिद्धान्तों के अनुरूप धार्मिक होते थे और विश्व में सत्य व न्याय के सिद्धान्तों के अनुसार राज्य करते व कराते थे। ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि जब किसी देश के पास आवश्यकता से अधिक वैभव व ऐश्वर्य हो जाता है तो वहां आलस्य व प्रमाद बढ़ता है जिससे उन्नति अवनति की ओर मुड़ जाती है। ऐसा ही महाभारतकाल से कुछ काल पहले आरम्भ हुआ और इन्हीं कारणों से 5,100 वर्ष पूर्व महाभारत का युद्ध हुआ। इस युद्ध में जान व माल की कल्पनातीत हानि हुई। देश की सभी व्यवस्थायें कुप्रभावित हुईं। राज्य के संचालन में बाधायें उपस्थित हुईं। विद्वानों की कमी से धर्म व शिक्षा व्यवस्थायें लड़खड़ा गईं। लोगों में मुख्यतः ब्राह्मणों ने वेदों के अध्ययन में श्रम करना लगभग छोड़ दिया। इस कारण देश व संसार में धर्म विषयक अन्धकार फैल गया। अज्ञान व अन्धविश्वासों में वृद्धि हुई और वेद विरुद्ध परम्पराओं का प्रचलन हुआ। यज्ञों में पशुओं की हिंसा, जन्मना जातिवाद, जन्मना ब्राह्मणवाद, छुआ–छूत, व्यक्ति व जड़पूजा, नास्तिकवाद, परतन्त्रता आदि के मूल में वेदों का अप्रचार ही मुख्य कारण रहा है।

ऐसे वातावरण में महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी का उदय व प्रादुर्भाव होता है और उनके नाम से नास्तिक मत, जो ईश्वर की सत्ता को नहीं मानते, चल पड़ते हैं। मूर्तिपूजा का आरम्भ भी जैन मत के द्वारा आरम्भ होता है। इनकी देखादेखी और अज्ञानता के कारण आर्य हिन्दुओं में मूर्तिपूजा का प्रवेश होता है। वेद प्रायः लुप्त व अप्रचलित हो जाते हैं। वेदों को जानने व यथार्थ रूप में समझने की योग्यता लोगों में समाप्त हो जाती है। अज्ञानता के कारण स्वार्थ सिद्धि के लिए मूर्तिपूजा और अवतारवाद व बाद में मृतक श्राद्ध व फलित ज्योतिष आदि का प्रचलन भी होता है। जन्मना जातिवाद, ऊंच–नीच, छुआछूत, वेदों के अध्ययन में अनधिकार आदि बातें भी प्रचलन में आती हैं। किसी में सामर्थ्य नहीं होता कि इनका विरोध करे। **'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'** व संसार को स्वप्नवत् मानने वाले स्वामी शंकराचार्य जी भी मूर्तिपूजा व अन्य वेद विरुद्ध मान्यताओं का विरोध नहीं कर पाते। देश दिन प्रतिदिन रसातल की ओर जा रहा होता है। छोटे छोटे नगर व प्रान्त स्वतन्त्र राष्ट्र बनने लगते हैं। विदेशी आते हैं और भारत को गुलाम बनाकर यहां की माताओं, बहिन, बेटियों को अपमानित करते हैं। अरब देशों में ले जाकर उनको कौड़ियों के दाम पर निलाम किया जाता है। उनसे मल–मूत्र तक साफ कराया जाता है और मार भी दिया जाता है। लोगों का जबरदस्ती बलप्रयोग से धर्मान्तरण किया जाता है, उन्हें गोमांस खाने को मजबूर किया जाता है और धर्मान्तरित न होने वालों के सर काट दिये जाते हैं। फिर अंग्रेजों की गुलामी आती है। वह भी जी भर कर देश का शोषण और यहां के हिन्दुओं पर भीषण अत्याचार करते हैं। देश का भविष्य धूमिल हो जाता है। आशा की कोई किरण दिखाई नहीं देती जो इस विपरीत परिस्थिति से देश को बाहर निकाले।

ऐसे समय में गुजरात के टंकारा कस्बे में बालक मूलशंकर का जन्म होता हैं। बाद में यही बालक स्वामी दयानन्द के नाम से प्रसिद्ध होते हैं। यह योग और सभी धर्मग्रन्थों का अध्ययन करते हैं। वेद विद्या प्राप्त कर उस पर अधिकार प्राप्त करते हैं और पाते हैं कि वेद ईश्वरीय ज्ञान एवं सभी सत्य विद्याओं की पुस्तक है। स्वामी विरजानन्द सरस्वती, मथुरा स्वामी दयानन्द के विद्यागुरु थे। वह उन्हें देश भर से अज्ञान व अविद्या को दूर करने का सन्देश व परामर्श देते हैं। स्वामी दयानन्द उनकी आज्ञा को स्वीकार कर इस कार्य में लग जाते हैं और 5,000 वर्षों से जिस अज्ञान व अविद्या ने देश की जड़ों को खोखला बना दिया था, उस अज्ञान व अंधविश्वासों को वेद विद्या के प्रचार से नष्ट कर देश को पुनः संसार में आध्यात्मिक व सामाजिक दृष्टि से सर्वोत्तम बनाने का आन्दोलन करते हैं और उसमें आंशिक रूप से सफल भी होते हैं।

ऋषि दयानन्द का जन्म 12 फरवरी, सन् 1825 को गुजरात प्रदेश के टंकारा नामक स्थान पर हुआ था। 22 वें वर्ष में उन्होंने गृह त्याग किया। सन् 1860 तक वह देश भर में घूम कर योग व अन्य विद्याओं को योग्य विद्वानों व योगियों आदि से सीखते रहे। पूर्ण विद्या उन्हें स्वामी विरजानन्द सरस्वती से सन् 1863 में प्राप्त हुई। वहां से चलकर उन्होंने अज्ञान व अन्धविश्वास दूर करने व देश की परतन्त्रता को दूर करने के लिए ज्ञान के प्रचार व प्रसार के प्रतीक वेद प्रचार का कार्य आरम्भ किया। वह देश में जाकर उपदेश करने के साथ वेद विरुद्ध मतों के विद्वानों से चर्चायें, वार्तालाप व शास्त्रार्थ करते थे। अविद्या व अन्धविश्वासों का खण्डन भी करते थे जो कि अत्यावश्यक था और आज भी है। ज्ञान के प्रचार व प्रसार के लिए ही उन्होंने सत्यार्थप्रकाश सहित यजुर्वेद–आंशिक–ऋग्वेद भाष्य, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। स्वामी जी के सभी ग्रन्थों में ज्ञान की प्राप्ति, गुलाम बनने व बनाने का विरोध, देश को स्वतन्त्र करने की प्रेरणा अनेक स्थानों पर विद्यमान है। सन् 1883 में संशोधित सत्यार्थप्रकाश में वह स्वराज्य वा आजादी की प्रेरणा करते हुए लिखते हैं **'कोई (अंग्रेज हुकमरान) कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय (अपने देश में उत्पन्न वेदों के विद्वान लोगों द्वारा संचालित राजसत्ता) राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत–मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों (अंग्रेजों) का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।'** यह, ऐसे व इससे मिलते जुलते अनेक वचन सत्यार्थप्रकाश और उनके अन्य ग्रन्थों में भी पाये जाते हैं जो देश की आजादी के प्रेरक बने। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में उक्त शब्दों में खुले रूप में अंग्रेजों के राज्य को भारतीयों द्वारा संचालित राज्य की तुलना में त्याज्य बताया है। देश के इतिहास में ऐसे शब्द इससे पूर्व किसी महापुरुष या व्यक्ति द्वारा नहीं कहे गये। ऐसा साहस अन्य कोई व्यक्ति कर भी नहीं सकता था। सन् 1942 में **'अंग्रेजों भारत छोड़ो'** का नारा हमारे राजनेताओं ने दिया, उसमें भी ऋषि दयानन्द जी के इन्हीं वाक्यों की प्रेरणा व प्रतिध्वनि कार्य करती हुई दृष्टिगोचर होती है। यही कारण था कि आजादी के आन्दोलन में सबसे अधिक भागीदारी आर्यसमाज के स्त्री व पुरुषों द्वारा की गई। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, वीर सावरकर सहित सभी क्रान्तिकारियों के गुरु पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, गोपाल कृष्ण गोखले के गुरु महादेव गोविन्द रानाडे, भाई परमानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगतसिंह और उनके पिता व पितामह सभी ऋषि दयानन्द के अनुयायी थे।

शेष पृष्ठ 2 का ....

विलाप करते पशु पक्षियों, वृक्षों तथा लताओं से पूछते हैं। जड़-चेतन का मानवीकरण कर वह हृदय विदारक वाणी से कहते हैं, 'तुम देखी सीता मृगनयनी?'

रामायण का जन्म क्रौंच पक्षी को तीर लगने से उसकी व्यथा, पीड़ा तथा चीत्कार से हुआ था। महर्षि वाल्मीकि के मुख से करुणा के पद निकले तत्पश्चात महाभारत का जन्म हुआ।

संत ज्ञानदेव सूखी रोटी को लेकर भागते कुत्ते के पीछे जाते हुए कहते हैं 'हे भगवान्, आप सूखी रोटी क्यों खायेंगे। मैं आप के लिये कटोरी में घी लाया हूं। रोटी पर लगा कर खाये।' कुत्ते से ज्ञानदेव जी का यह कैसा एकाकार है?

रामकृष्ण परमहंस सीख रहे और चिल्ला रहे हैं, शिष्य उनकी पीठ पर गौ के खुर के निशान देख कर अवाक् रह गए। एक गाय जो घास चर रही थी, उसके खुर का दवाब हरी कोमल घास पर पड़ रहा था। परमहंस जी उस घास से एकरूप होकर उसके दुःख की अनुभूति कर रहे थे।

कथित उदाहरण सृष्टि से तादात्म्य, एकरूप तथा संपूर्ण सृष्टि जीवन्त है और एक स्थान के कम्पन की अनुभूति उन सब को होती है जो इस सृष्टि में ईश्वर को व्याप्त देखते हैं।

हमारी दिनचर्या प्रकृति के साथ अध्यात्म एकात्म संबंध स्थापित करती है।

अन्त में पर्यावरण के संरक्षण के संबंध में ऋषियों ने प्रार्थना करने का जो आग्रह किया है, उसका सच्चा हृदय से उच्चारण करें। हृदय में स्थान दें और तदानुकूल आचरण करें, यह वैदिक मंत्र है :-

ॐ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्ष शान्तिः
पृथिवीः आपः शान्तिः ओषधयः शान्ति।
वनस्पतयः शान्ति विश्वेदेवाः शान्तिः
ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधिः।।
।।ॐ शान्तिः, शान्तिः शान्तिः।।

दयालोक के नक्षत्रों में शान्ति ही गतिमान मिले, अन्तरिक्ष, पृथ्वी तल पर शान्ति ही गतिमान् मिले, जलाशय, वनस्पति, प्रकृति में शान्ति के भण्डार मिलें, जलाशय, वनस्पति, प्रकृति में शान्ति के भण्डार मिले। पुष्पलता, औषध अन्न में शान्ति के आधार मिलें। अखिल विश्व की दिव्य शक्तियों में शान्ति की पहचान मिले।

ज्ञान ध्यान सागर, गगन में शान्ति की पहचान मिले।

लाभप्रद हैं फलों का सेवन

वैज्ञानिक अनुसंधान से ज्ञात हुआ है कि शाकाहारी भोजन के साथ फलों का आहार शरीर को चिरयौवन प्रदान करता है। मांसाहारी और तेज मिर्च मसालेयुक्त पदार्थ शरीर को रोगी बनाते हैं और त्वचा की लावण्यता को कम करते हैं। हरे पत्तों का सूप या फल आदि शरीर को निरोग बनाने में काफी सहायक होते हैं।

आमः यह फलों का बादशाह माना जाता है। इसकी अनेक जातियां होती हैं जिनमें हाफुश, लंगड़ा, सफेदा, दशहरी, चौसा, दरबारी और राजभोग प्रमुख हैं। यह गले के रोगों के लिए बहुत लाभदायक पाया गया है। अतिसार, मूत्र रोग, योनि रोग में लाभ प्रदान करता है और वीर्यवर्द्धक भी होता है। गर्मी में लू लगने पर कच्चे आम का पन्ना बहुत लाभप्रद होता है। दूध के साथ आमरस शक्ति प्रदान करता है।

अमरूद : यह फल भारत में सभी प्रांतों में पाया जाता है, लेकिन इलाहाबाद के अमरूद का विशेष स्थान है। यह सात्विक मधुर फल है। हल्का खट्टा पकने पर स्वादिष्ट-शीतल, कफकारक, रक्तवर्द्धक, त्रिदोषनाशक, दाह, मूर्च्छा में सहायक, कब्ज के रोगियों में बहुत उपयोगी है। कुछ देशों में इसके पत्तों को पानी में उबालकर लोग स्नान करते हैं और मधुमेह के रोगियों को पिलाते हैं। इसके पत्तों का काढ़ा हैजा, दंत पीड़ा और जले स्थान आदि पर लगाने से लाभ होता है।

केला : यह वृक्ष भारत ही नहीं, विदेशों में भी प्रसिद्ध है। इसकी अनेक जातियां होती है। हरी छाल, लाल, छाल, पीली छाल, कोकनी और चीनी छाल। यह पौष्टिक और कृमिनाशक होता है। यह मासिक धर्म की अनियमिताओं को दूर करता है, रक्त विकार, मधुमेह, अग्निमथ, कुष्ठ, कान की पीड़ा, गुर्दे की निर्बलता में सहयोगी, सर्प दंश के रोगी को इसके पेड़ से निकले जल का एक प्याला देने से लाभ होता है और कच्चा खाने से पेशाब की अधिकता में कमी आती है।

अनार : देश विदेशों में सभी वर्ग के लोग इसके रस का आनन्द लेते हैं। अनार त्रिदोष नाशक, ज्वर दूर करने वाला, हृदय रोग में लाभप्रद, मुखरोग दूर करने वाला और बलवर्द्धक होता है। इसके फूल के रस को नाक से खून बहने की अवस्था में डालने पर लाभ होता है। छिलके को काढ़ा कृमिनाशक और खांसी में लाभप्रद होता है।

सेब : इसका वृक्ष मध्यम श्रेणी की ऊँचाई लिए हुए होता है। भारत में कश्मीर, हिमाचल प्रदेश में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह वात-पित्तनाशक, पौष्ठिक, शीतल, वीर्यवर्द्धक होता है। इसमें विटामिन बी काफी मात्रा में होता है। नेत्रों के अनेक रोगों में इसका सेवन लाभप्रद होता है। कब्ज के रोगी को रात को सेब खाकर दूध पीना चाहिए। इससे प्रातः पेट अच्छी तरह साफ होता है। सेब गुर्दे की पीड़ा में लाभप्रद होता है। और इसके रस के सेवन से नींद अच्छी आती है।

जामुन : भारत के सभी प्रांतों में इसके पेड़ पाए जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु के अंत में इसके सेवन से रक्त विकार संबंधी रोगों में राहत मिलती है। मधुमेह में यह विशेष लाभप्रद होता है। मुधमेह के रोगी को रोजाना तीन रत्ती जामुन का चूर्ण दिया जाना लाभप्रद होता है। यह खांसी में लाभप्रद, मसूड़ों को मजबूत करता है।

आड़ू : वास्तव में यह फल चीन का है। यूरोप में भी यह काफी पाया जाता है। भारत में हिमाचल, मणिपुर और उत्तरी भागों में काफी पैदा होता है। यह पौष्टिक, मधुर, हृदय रोगों में लाभप्रद, प्रमेह, बवासीर के रोगी के लिए उपयोगी होता है। इसके पत्ते कृमिनाशक होते हैं।

अंगूर : यह फल कश्मीर, कर्नाटक आदि स्थानों में काफी होता है। यह वीर्यवर्द्धक होता है। काले अंगूर और हरे अंगूर का शर्बत शरीर के लिए पुष्टिकारक होता है। ज्वर, हल्की हरारत एवं पेट के रोगों में तो यह बहुत हितकारी होता है। नेत्रों के लिए अंगूर का सेवन बहुत फायदेमन्द होता है।

संतरा, मौसमी, मालटा एवं कीनूः ये फल भारत के लगभग सभी भागों में प्राप्त होते हैं। नागपुर का संतरा, मुम्बई की मौसमी प्रसिद्ध है। इनके फलों का रस पेट के रोग, गले के रोग, श्वास के रोग, दस्त में लाभदायक होता है। बलवर्द्धक, ज्वरनाशक, प्यास बुझाने वाले, रक्त पित्त नाशक। विटामिन सी और ए होने से नेत्र रोग में उपयोगी होता है। इसके रस में हींग मिलाकर देने से कृमिनाश होता है।

अलूचा : गढ़वाल, कश्मीर, पश्चिम हिमाचल के क्षेत्रों में अधिक होता है। यह प्यास को हरने वाला, खांसी में लाभप्रद होता है। गले के रोगों में उपयोगी और इसके पत्ते कृमिनाशक होते हैं।

चीकू : यह पित्तनाशक, ज्वरनाशक एवं लौहपूर्ण होता है।

पपीता : यह पौष्टिक, रूचिकर, शीतल होता है। मधुमेह के रोगियों के लिए लाभकारी होता है। कच्चे पपीते की सब्जी पेट के रोगों में हितकारी होती है। इसके बीज तो अनेक औषधियों में उपयोगी होते हैं।

खरबूजा : यह अमृत के समान गुणकारी होता है। वीर्यवर्द्धक, उन्माद का नाश करता है। शीतल, पसीना लाने वाला होता है। स्त्रियों में दूध बढ़ाता है। गुर्दे के रोग में लाभकारी, पीलिया में फायदेमन्द, पथरी को तोड़ता है। पेट की गर्मी को कम करता है। मुख पर लेप करने से झाइयां मिटती है। इसके बीज पेट साफ करते हैं, वीर्यवर्द्धक, नेत्रों के लिए शक्तिदायक, पेशाब की जलन और जिगर की सूजन भी मिटाते हैं।

तरबूज : यह पीलिया में लाभप्रद, वात कफ नाशक होता है। इसके बीज मधुर और नेत्रों के लिए उपयोगी, बलकारक, धातुवर्द्धक होते हैं, खून की उल्टी में भी इसके बीजों से लाभ होता है।

सिंघाड़ा : यह वीर्यवर्द्धक, दाह दूर करने वाला होता है, इसके सेवन से प्यास कम लगती है। यह कामोद्दीपक, त्रिदोषनाशक, श्रम हारक, सूजन और संताप दूर करने वाला होता है। सिंघाड़ा ज्वरनाशक, मलेरिया में सहायक एवं रक्त प्रदर में भी उपयोगी होता है।

नारियल : यह वीर्य वर्द्धक, स्निग्ध, भारी कब्ज दूर करने वाला, बल कारक, ज्वर में लाभप्रद, प्यास बुझाता है। रूधिर दोष और क्षय रोगी के लिए भी लाभप्रद होता है। सूखा नारियल भी वीर्यवर्द्धक होता है। इसका तेल केशों के लिए उपयोगी होता है और जले स्थानों पर लगाने से लाभ मिलता है।

अखिल भारतीय राजार्य सभा का राष्ट्रीय अधिवेशन दिल्ली में सम्पन्न हुआ

दल विहीन सरकार से ही राष्ट्र का भला हो सकता है, पार्टीयों के द्वारा देश में अराजकता फैल रही है विभिन्न पार्टीयों का संविधान राष्ट्र घातक सिद्ध हो रहा है। विकसित देशों में भी मुख्यतः दो ही पार्टीयां हैं। भारत में पार्टीया ही भ्रष्टाचार की जड़ हैं अतः दल विहीन सरकार से ही राष्ट्र का भला हो सकता है। व्यक्तिगत प्रत्याशीयों का चुनाव हो और उनमें से ही प्रधानमंत्री व मंत्री मण्डल का चयन होकर दल विहीन राष्ट्रीय सरकार का निर्माण होना ही राजार्य सभा का मुख्य उद्देश्य है उक्त विचार अखिल भारतीय राजार्य सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य चन्द्र देव शास्त्री ने अखिल भारतीय राजार्य सभा के राष्ट्रीय अधिवेशन दिल्ली में व्यक्त किये। आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (अध्यक्ष, अखिल भारतीय आर्य सभा म.प्र.) के कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में बताया कि हमारे समाज में तीन सभाएँ होनी चाहिए। 1. धर्मार्य सभा, 2. विद्यार्य सभा, 3. राजार्य सभा। इसी प्रकार राजार्य सभा का चुनाव प्रजा के माध्यम से हो किन्तु राजा भी निरंकुश न हो।

(1) आज के समस्त सांसदों एवं विधायकों का भत्ता, पेशन आदि पूर्णतः बंद होनी चाहिए क्योंकि यह प्रजा के सेवक है। करोड़ों रुपया नेताओं के हित में जाता है। (2) सभी को अनिवार्य चिकित्सा निःशुल्क होना चाहिए एवं केवल सरकार के द्वारा ही चिकित्सालय चलाये जाये बाकी सब प्राईवेट चिकित्सालय बंद किये जाये। (3) पच्चीस वर्ष तक समस्त बालक/बालिकाओं को अनिवार्य शिक्षा भोजन एवं आवास आदि की निःशुल्क व्यवस्था सरकार को करनी चाहिए सभी के बच्चों को एक साथ चाहे वह राजा के हो या रंक का चाहे गरीब हो, चाहे अमीर हो, इस प्रकार सभी बालक/बालिका सरकार की व्यवस्था में अध्ययन करेंगे। जिससे आरक्षण जैसी समस्या का समाधान हो जायेगा। प्राईवेट विद्यालय पूर्णतः बंद किये जाये। (4) सभी को निःशुल्क न्याया व्यवस्था करना सरकार का दायित्व है। (5) प्रांतीय भाषाओं के साथ-साथ संपर्क भाषा हिन्दी एवं राष्ट्रभाषा संस्कृत होनी चाहिए। (6) गौवंश की हत्या पूर्णतः बंद करना चाहिए एवं गौ हत्यारों को फाँसी की सजा दी जाये आदि प्रस्तावों का पुर जोर रूप से समर्थन देश भर के विभिन्न प्रांतों से आये अध्यक्षों/प्रतिनिधियों ने किया।

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर म.प्र.

शिविर के समापन समारोह के अवसर पर प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री रामेश्वर पटेल (पूर्व मंत्री, मध्यप्रदेश व प्रज्ञा गर्ल्स हाई स्कूल एवं विद्यासागर स्कूल चैयरमेन, इन्दौर) ने कहा कि आज हमारे समाज व राष्ट्र को देश भक्त चरित्रवान आदर्श युवकों की बहुत बड़ी फौज चाहिए आज इन युवकों ने आत्मरक्षार्थ व्यायाम, अस्त्र-शस्त्र प्रदर्शनों व आसानों के अद्भूत प्रदर्शन ने यह सिद्ध कर दिया है कि जो नैतिक-आध्यात्मिक-चारित्रिक एवं देश भक्ति की शिक्षा जो स्कूल-कॉलेजों में नहीं दे पा रहे है। वह इन आर्य युवक शिविरों के माध्यम से दी जा रही है जिससे इनका महत्व आज और भी अधिक बढ़ गया है।

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र.) ने कहा कि इन आर्य युवक शिविरों के माध्यम से युवकों में स्वालंबन, नियमित दिनचर्या, आध्यात्मिक उन्नति का पाठ पढ़ाया जा रहा है। जिससे हमारे राष्ट्र का भविष्य उज्जवल है।

हार्दिक आभार

आर्य समाज अमर कालोनी, नई दिल्ली के प्रधान श्री जितेन्द्र कुमार डाबर जी से शुद्धि सभा की ओर से मेरी प्रार्थना पर शुद्धि समाचार के मासिक खर्च एवं प्रचारक आदि का मासिक व्यय प्रदान करने की मेरी अपील पर उन्होंने अपनी आर्य समाज अमर कालोनी, (लाजपत नगर), नई दिल्ली की ओर से रु. 8,000/- की राशि दान स्वरूप प्रदान की है इसके लिये मैं आर्य समाज के प्रधान श्री जितेन्द्र कुमार डाबर जी, मंत्री श्री ओमप्रकाश बड़ा जी, कोषाध्यक्ष श्री सुभाष आर्य जी का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ शुद्धि कार्य को बढ़ाने के लिये भविष्य में भी अपनी आर्य समाज की ओर से आर्थिक सहयोग प्राप्त करते रहेंगे।

श्री जितेन्द्र कुमार डाबर जी बड़े ही सौम्य स्वभाव, उदारवादी, दानशील, तथा शुद्धि कार्य के समर्थक व्यक्ति हैं। इससे पूर्व भी वह अपनी आर्य समाज की ओर से समय-समय पर शुद्धि सभा को भरपूर आर्थिक सहयोग प्रदान करते रहे हैं। इसके लिए श्री जितेन्द्र कुमार डाबर जी का जितना भी धन्यवाद किया जाये कम है।

– चतर सिंह नागर, महामंत्री

हार्दिक शुभःकामनाएँ

डॉ. पूर्णसिंह डबास जी पूर्व प्रधान आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली विशेष सहयोगी एवं शुद्धि सभा के प्रतिष्ठत अंतरंग सदस्य के 80वें जन्म दिन गत माह 10 जुलाई 2018 को बड़ी ही प्रसन्ता के साथ मनाया गया। यह शुभ कार्य यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। इस शुभ अवसर शुद्धि सभा की ओर से श्री चतर सिंह नागर भी उपस्थित थे। श्री डबास परिवार की ओर से विभिन्न आर्य संस्थाओं, गुरुकुलों एवं शुद्धि सभा को आर्थिक सहयोग प्रदान किया। इसके लिये हम श्री डबास जी का हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा एवं शुद्धि समाचार परिवार की ओर से डॉ. पूर्णसिंह डबास जी को उनके 80वें जन्म दिन की हार्दिक शुभकामनाएँ! हम सब ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनको स्वस्थ जीवन एवं दीर्घायु प्रदान करे ताकि वह इसी प्रकार से आर्य समाज, गुरुकुलों एवं शुद्धि सभा को तन, मन, धन से सहयोग प्रदान करते रहें।

– नरेन्द्र वलेचा, (प्रधान) –चतर सिंह नागर, (महामंत्री)

माह जुलाई 2018 के आर्थिक सहयोगी

आर्य समाज अमर कालोनी, नई दिल्ली		8000/-
डॉ. पूर्णसिंह डबास जी, साकेत, नई दिल्ली (80वें जन्म दिन पर)		3100/-
श्री अशोक सहगल जी, प्रधान, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली (आ.स.शु.)		2100/-
आचार्य ओमप्रकाश यजुर्वेदी जी, असोला फतेहपुर बेरी, नई दिल्ली (आ.स.शु.)		2100/-
मेजर एस.पी. कोहली जी, डी.डी.ए. फ्लैट, मुनिरिका, नई दिल्ली		1000/-
श्रीमती ममता चौधरी जी, प्रधानाचार्या, जवाहर नगर, कोटा, राजस्थान		1000/-
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/-
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सै.-15, फरीदाबाद	मासिक	1000/-
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/-
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बगलौर	मासिक	700/-
श्री शिवकुमार मदान जी, ट्रस्टी, जनकपुरी, नई दिल्ली	मासिक	700/-
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री, शुद्धि सभा	मासिक	500/-
श्रीमती वासंती चौधरी जी, अशोक विहार, फेज-1 दिल्ली	मासिक	500/-
श्री गौरी शंकर धवन जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली		200/-
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	मासिक	100/-

श्रीमती संतोष चावला जी (आर्य महिला आश्रम), द्वारा एकत्रित दान

बेबी सौम्या सुपुत्री डॉ. देवेश प्रकाश आर्य	100/-
श्रीमती कैलाश कपूर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
श्रीमती आशी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
श्रीमती कमला डाबर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
श्रीमती शकुन्तला दीवान जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
श्रीमती प्रेमलता गौतम जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
श्रीमती सुदेश तलवार जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
श्रीमती प्यारी देवी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
ध्रुव तथा बेबी की नानी श्रीमती कृष्णा दुबे, आर्य महिला आश्रम	100/-
डॉ. दीपक जी, दंत चिकित्सक, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
डॉ. सचदेव जी, नेत्र चिकित्सक, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
श्रीमती मृदुला रस्तोगी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
श्रीमती इन्दु विज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	50/-
श्रीमती निर्मल शर्मा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	50/-
श्रीमती शोभा आचार्य जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	50/-
श्रीमती संतोष हिंगल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	50/-
श्रीमती कृष्ण खेड़ा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	50/-
श्रीमती कैथरीन जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	50/-
श्रीमती शुक्ला जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	50/-

श्रीमती संतोष वधवा जी द्वारा एकत्रित दान

श्री एम.एल. गुलाटी जी, डी.ब्लाक, नारायणा विहार, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती रमा खुराना जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	250/-
श्रीमती स्वराज थापर जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली	100/-
श्री रमेश मेहरा जी, आई.ब्लाक, नारायणा विहार, नई दिल्ली	100/-
श्रीमती संतोष वधवा जी, ई. ब्लाक, नारायणा विहार, नई दिल्ली	100/-

सूचनाऐं

आर्य समाज राजेन्द्र नगर द्वारा वेद प्रचार श्रावणी पर्व

दिनांक 29 अगस्त बुधवार से 2 सितम्बर रविवार 2018 तक चलेगा। ब्रह्मा आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी वेद प्रवचन डॉ. धमेन्द्र शास्त्री जी तथा भजन श्री अंकित शास्त्री जी के होंगे ।

मंत्री, नेरन्द्र वलेचा, आर्य समाज राजेन्द्र नगर

आर्य समाज चन्दन नगर आलम बाग लखनऊ में वेद प्रचार श्रावणी पर्व

दिनांक 19 अगस्त से 22 अगस्त तक मनाया जा रहा है। ब्रह्मा व वेद प्रवचन आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी (दिल्ली) तथा भजन श्री अंकित शास्त्री जी के होंगे ।

संयोजक, श्रीमती अमिता बिरमानी

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-8-2018 (pages 8) Posting Date : 2-3 Every Month Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2018-20

सेवा में,

शुद्धि समाचार

अगस्त – 2018

संत के लक्षण

– नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद ही कभी आसाराम तो कभी रामपाल तो अब राम रहीम खुद को कभी संत तो कभी स्वंभू भगवान कहने वाले इन पाखंडियों पर कानून का शिकंजा कसने पर इनके कुकर्मों की पोल खुलती है तो सामान्य व्यक्ति के मन में इन तथाकतिथत संत, बाबाओं के प्रति वितृष्णा का भाव उत्पन्न होता है। इन संत बाबाओं के कुकृत्य देखकर पैदा हुई वितृष्णा इनके भक्तों में निराशा उत्पन्न कर देती है। वह खुद को ठगा महसूस करने लगते हैं। ऐसे में एक सामान्य व्यक्ति किसे अपना आदर्श पथ प्रदर्शक माने ऐसा सोचने पर मजबूर हो जाता है। एक छोटी सी उपभोक्ता सामग्री खरीदने से पूर्व भी व्यक्ति उसकी कितनी जांच पड़ताल करके परखता है। उस उपभोक्ता सामग्री को मापदंडों पर कसता है। परन्तु किसी को अपने जीवन का आदर्श मानकर गुरु धारण करने से पूर्व किसी मापदंड पर नहीं कसा जाता। यह हमारी अबोधता ही तो है कि बिना संत के लक्षण जाने किसी पाखंडी को संत समझ कर उसे अपना तन, मन, धन समर्पित कर देते हैं और फिर वह हमारा शोषण करता है। यही मायने में अपने इस शोषण के लिए हम खुद भी उतने जिम्मेदार हैं जितना वह पाखंडी। अपराध, अत्याचार, शोषण को सहना करना या प्रश्रय देना ये सभी बराबर के दोष हैं। किसी को भी संत समझकर अपना पथ प्रदर्शक व गुरु मानने से पूर्व वैदिक मान्यताओं की कसौटी पर भली-भाँति कस कर देख लेना चाहिए। जैसे कोई भी उपभोक्ता सामग्री बिना मापदंडों को परखे खरीदने पर हम अक्सर धोखा खा बैठते हैं। और घटिया निम्नस्तरीय सामान हमारी परेशानी का कारण बनता है। उसी प्रकार बिना जाँचे परखे किसी को संत समझकर गुरु धारण करके अपना सर्वस्व समर्पण करते हुए हम अबोध उस पाखंडी के हाथों शोषण का शिकार हो जाते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि वे कौन से लक्षण हैं जो किसी संत, महात्मा, गुरु, अध्यापक, पथ प्रदर्शक में आवश्यक रूप से होने चाहिएं । ये लक्षण महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्लास में महाभारत उद्योग पर्व के श्लोकों को उद्घृत करते हुए लिखे हैं। प्रमुख रूप से निम्न लक्षण किसी भी संत, महात्मा, गुरु, अध्यापक में होने चाहिएं।

1. जिसे सम्यक् आत्मज्ञान हो अर्थात् वह आत्मा परमात्मा के सत्य स्वरूप संबंधों को भलीभाँति जानता हो। उसे जीव द्वारा ईश्वर की अनुभूति के मार्ग का भी बोध हो।

2. जो सुख-दुःख, हानि-लाभ, मान-अपमान, निन्दा-स्तुति में हर्ष या शोक कभी ना करे अर्थात् प्रत्येक परिस्थिति में समभाव बनाए रखे जिसका उदाहरण तुलसीदास ने राम के राज्यभिषेक और वनगमन के समय सुख और मन में समान भाव से दिया है। जिसे योगेश्वर कृष्ण ने गीता में स्थितप्रज्ञ कहा है और गीता के दूसरे अध्याय में ऐसे स्थिर बुद्धि स्थिरतप्रज्ञ के लक्षण बतलाए हैं।

3. जो कर्महीन, निकम्मा, आलसी कभी ने रहे और जिसके मन को विषय संबंधी उत्तम-उत्तम पदार्थ भी आकर्षित न कर सकें। ऐसा ही व्यक्ति हम मनुष्यों का पथ प्रदर्शक होने योग्य है।

4. जो विद्वान सदैव धर्मयुक्त कर्मों का सेवन, अधर्म का त्याग, ईश्वर वेद और सत्य को जानने मानने वाला हो तथा ऐसी ही प्रेरणा दूसरों को दिया करे वही हम मनुष्यों का आचार्य होने के योग्य पंडित है।

5. जो व्यक्ति कठिन विषय को भी शीघ्रतापूर्वक आसानी से जानकर समझा सके। वेदादि शास्त्रों में रुचि रखकर अध्ययन किया करे और जाने हुए वेदादि ज्ञान का दूसरों के उपकार के लिए प्रयोग करे, अपने स्वार्थ के बारे में न सोचे वही संत हमारा गुरु होने योग्य है।

6. हमारा पथ प्रदर्शक कभी किसी अयोग्य की इच्छा न करे। नष्ट हुए पदार्थ का शोक व किसी प्राप्ति पर हर्ष न करे। ऐसा सम्यक् बुद्धि वाला ही हमारा आचार्य होने योग्य है।

7. जिसकी वाणी सब विद्याओं और प्रश्नों के उत्तरों को करने में निपुण हो। यथायोग्य तर्क ग्रंथों के यथार्थ अर्थ का कुशल वक्ता हो वही हमारा पथ प्रदर्शक हो सकता है।

8. जिसकी प्रज्ञा सुने हुए सत्य अर्थ के अनुकूल और जिसका श्रवण बुद्धि के अनुरूप हो वही श्रेष्ठ धार्मिक पुरूष अपना पथ प्रदर्शक होना चाहिए।

लेकिन अंधश्रद्धा के वशीभूत इसके विपरीत गुणों वाले घमंडी अनपढ़ बिना वेदादि शास्त्र जाने लोगों को संत समझकर अपना गुरु बना लेते हैं। ऐसे मूढ़ दरिद्र होकर भी बड़े बड़े मनोरथ करते हैं। बिना कर्म पदार्थों के इच्छा रखते हैं। और फिर अपने इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपने अंधभक्तों का शोषण करते हैं। हमें अपने अध्यापक गुरु आचार्य के लक्षणों को भलीभाँति जानकर परखते हुए ही अपना पथ प्रदर्शक बनाना चाहिए।

602 जी एच 53 से. 20
पंचकूला, हरियाणा
मो. 9467608686, 9878748899

देश में सुधार

न इन्डिया न भारत देश का नाम आर्यवर्त होना चाहिए ।
जहाँ सृष्टि की हुई उत्पत्ति, तिब्बत हमारा अंग होना चाहिए ।
चीन से मित्रता हो हमारी, बोध भिक्षुओं का काम है।
कश्मीर को जो हो बचाना, धारा ३७० भँग होनी चाहिए ।
बढ़ती जनसंख्या रोकने, समान नागरिक संहिता हो लागू ।
अनपढ़ों को हो रही हानि का प्रकोप बताना चाहिए ।
निष्काम कर्म में आस्था रखने वाले जब चलाऐंगे सरकार ।
गाली गलोच का दौर मिटे, हट जायेगा अंधकार ।
गोहत्या रोकनी है, तो शाकाहार हो दबंग ।
अधँविश्वास मिटाना है तो मूर्तिपूजा ने करवाये अत्याचारों
को प्रकट करो, ऐसी गलती फिर न हो ।
जीत हमारी होती रहे, कभी न हारें, कैसी भी जंग ।
वीर सावरकर का नाम है लेना, तो सिंधु नदी पर हो अधिकार।
न्याय तभी हो सकता, मुकदमें न करे एक साल पार।
पीने के पानी की कभी न हो, पर्वतों पर वृक्ष बेशुमार।
प्रर्यावरण है बनाना, शाँतिः पाठ का हो विस्तार ।
दंगे हैं जो रोकने, बिना विचोले इक ईश्वर से सम्बन्ध ।
दुरघटनायें न हो पावें, मदिरा पर उचित प्रतिबंध ।
अमरीका की नकल है करना, शिक्षा निशुल्क होनी चाहिए।
औषधियां भी निशुल्क मिलें, इतना तो होना चाहिए।
बीमारी से बचना चाहो, योग आसनों का लो सहारा ।
तन मन धन की शुद्धि-गहनों से करो किनारा ।
मतमतांतरों का असली रूप बता, आर्य समाज आगे रहना चाहिए ।
बाकि ध्वजौ को छोड़, ओ३म् ध्वज फहराना चाहिए ।
शुद्धि कार्य बढ़ाने को, हर जिले में प्रचारक होना चाहिए।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम का लक्ष्य कभी तो पूरा होना चाहिए ।

- हरबंस लाल कोहली

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह-सम्पादकः डॉ. देवेश प्रकाश आर्य